B.M.A. College, Baheri, Darbhanga

Date:- 12/09/2020

B.A.-I (Gen & Hons.) Paper-I By: Dr. Rajesh Kumar

Deptt. of Sociology Sociology

Subject: Sociology

विषय:- सांस्कृतिक विलम्बना का सिद्धांत

W.F. Ogburn ने संस्कृति और सामाजिक परिवर्तन के सम्बन्ध को स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम अपनी पुस्तक 'Social Change' में सांस्कृतिक पिछड़ाव व सांस्कृतिक विलम्बना के सिद्धांत को प्रस्तुत किया है।

मुख्यतः ऑगबर्न अपने सिद्धांत के माध्यम से यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि दुनिया के कई भाग विकास की होड़ में आगे बढ़ जाते हैं और कई भाग पीछे छूट जाते हैं, जो आगे बढ़ते हैं वह परिवर्तन लाते हैं। इनका कहना है कि संस्कृति के भौतिक एवं अभौतिक तत्व जब एक दूसरे से सम्बन्धित होते हैं तो वे आगे निकल जाते हैं लेकिन जब भौतिक एवं अभौतिक तत्व एक दूसरे से सम्बन्धित नहीं होते हैं तो वे पीछे छूट जाते हैं और दोनों संस्कृतियों के बीच एक विलम्बन की स्थिति पैदा हो जाती है। इसे हम एक ग्राफ के द्वारा भी समझ सकते हैं।

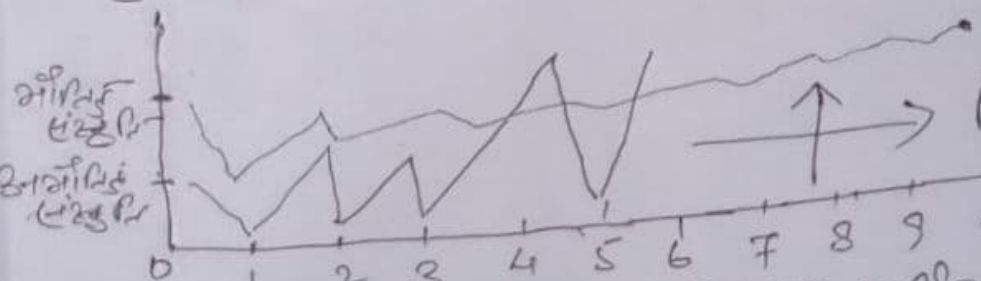

चूँकि भौतिक संस्कृति ज्ञान, विज्ञान, तार्किकता एवं आधुनिकता पर बल प्रदान करती है इसलिए वह समय गँवाए बिना आगे बढ़ती चली जाती है जबकि अभौतिक संस्कृति परंपरा, रीति-रिवाज, रूढ़िवादी विचार, अंधविश्वास इत्यादि प्रधान होती है और वह पारंपरिकता पर बल अधिक प्रदान करती है जिसके कारण भौतिक संस्कृति विकास की दिशा में आगे बढ़ जाती है और अभौतिक संस्कृति पीछे छूट जाती है। भौतिक संस्कृति परिवर्तन को प्रधानता प्रदान करता है, जबकि अपने पुराने विचारों एवं परिवर्तन की इच्छा न रखने के कारण अभौतिक संस्कृति पीछे छूट जाती है जिससे एक समाज पीछे छूट जाता है और दूसरा समाज आगे बढ़ जाता है। इसी कारण से विलम्बन पैदा

B.M.A. College, Baheri, Darbhanga

Date: 14/09/2020

B.A. (Hons) - I
Paper - II
Deptt. of Sociology

By: Dr. Rajesh Kr.

विषय : दुर्खीम का श्रम विभाजन का सिद्धांत।

दुर्खीम के श्रम का सिद्धांत का प्रकाशन सर्वप्रथम 1893 मे प्रकाशित हुआ जो उनका पी० एच०डी० का अंश था। इस सिद्धांत के आधार पर इन्होने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि समाज के अंतर्गत सामाजिक नियम एवं कानूनो को कैसे पालन कराया जाता है, इसके पीछे किस प्रकार का विचार होता है। इस तथ्य को स्पष्ट करने हेतु दुर्खीम समाज को दो भागों में बाँटते है: (1) Mechanical Solidarity यांत्रिक एकता
(2) Organic Solidarity - सावयवी एकता

(1) यांत्रिक एकता: इसके अन्तर्गत दुर्खीम यह स्पष्ट करते है कि इस प्रकार की एकता आदिम युग में पाई जाती थी, जहाँ रीति, रिवाज, प्रथा एवं परंपराओं का आधिपत्य था जहाँ कानून बहुत ज्यादा दमनकारी था। समाज पूर्ण तरीके से रीति-रिवाज एवं परंपराओं पर आधारित था। लोगों का जीवन जहाँ सामूहिक तथ्यों की प्रधानता था। लोगों का जीवन गतिहीन था एवं वहाँ विचारो में किसी भी प्रकार का परिवर्तन दृष्टिगोचर नही होता था।

(2) सावयवी एकता: इस एकता के अन्तर्गत समाज का स्वरूप ... जहाँ कानून की एवं विचारो में प्रधानता आने लगा। जहाँ उत्पादन प्रधानता तो थी लेकिन दमनकारी नही था। जहाँ उत्पादन वितरण, एवं उपभोग पर आधारित व्यवस्था थी। यहाँ के लोगों का जीवन बहुत ही गतिशील था, एवं इनके विचारो मे हमेशा परिवर्तन होते रहते थे। यहाँ रीति-रिवाजो की प्रधानता अंधविश्वास, परंपरा एवं रीति-रिवाजो की प्रधानता नही थी बल्कि विचारो में प्रगतिशीलता थी। यहाँ व्यक्तिगत भावना की प्रधानता थी।

इस प्रकार दुर्खीम यह स्पष्ट करते है कि समाज का एक भाग और दूसरा कैसे नियमित होता था। इसी के परिणाम स्वरूप कुछ समाजो में विकास की कई आर्थिक ...

B.M.A. College, Baheri, Darbhanga.

B.A. Socio (सब्स.) Part- II

Paper- IV

Date:- 13/05/2020

By:- Dr. Rajesh Kr.

Sociology

Deptt. of Sociology

विषय:- सर्वेक्षण एवं इसकी विशेषताएँ

सर्वेक्षण अनुसंधान की एक ऐसी विधि है जिसका प्रयोग अनुसंधानकर्ता तब करता है जब उसे किसी घटना या विषय से सम्बन्धित आवश्यक आँकड़ों किसी सम्बन्धित समूह के उत्तरदाता से प्राप्त करता है और इसका उपयोग करता है। सर्वेक्षण का प्रयोग किसी भी घटना या विषय के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह ज्यादातर व्यावसायिक मामलों में प्रयोग किया जाता है। यह किसी भी घटना के तुरंत प्रभाव को जानने का प्रयास करता है। सर्वेक्षण के कार्य के लिए प्रशिक्षण अति-आवश्यक है। अच्छा सर्वेक्षण वही होता है जिसके अन्तर्गत सर्वेक्षण की योजना, संगठन तथा संचालन, लगन, चतुरता, प्रबंध की योजना तथा विशेष अनुभव की जरूरत होती है, जो प्रशिक्षण से प्राप्त की जाती है।

सर्वेक्षण की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:-

- **सैम्पल का आकार**: समूह के अन्तर्गत कितने उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त करनी है।
- **भौगोलिक जानकारी**: सर्वेक्षण से पूर्व जहाँ सर्वेक्षण करना है उस क्षेत्र की पूरी भौगोलिक जानकारी होनी चाहिए।
- **स्पष्ट प्रश्न**: इसके अन्तर्गत उत्तरदाता से स्पष्ट प्रश्न पूछे जाने चाहिए ताकि वे समझकर उत्तर दे सकें।
- **केन्द्रित सर्वेक्षण**: उत्तरदाता से सिर्फ विषय से सम्बन्धित प्रश्न ही पूछे जाने चाहिए।
- **वैकल्पिक प्रश्न**: उत्तरदाता के सामने वैकल्पिक प्रश्न रखने चाहिए ताकि वे सिर्फ एक विकल्प में से ही अपना उत्तर चयन करें।
- **प्रेरणा**: उत्तरदाता से प्रश्न पूछने से पहले उसे प्रेरित करना भी एक अच्छे सर्वेक्षक के लिए जरूरी है ताकि वह प्रश्नों का उत्तर स्पष्ट एवं सही बता सके।
- **विश्वास**: उत्तरदाता से सर्वेक्षक को बिल्कुल अपने एवं अपने उद्देश्य के विषय में सही जानकारी देना चाहिए ताकि वह स्थिति को समझते हुए जवाब